शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

विज्ञान के साथ हिंसा भस्मासुर

विनोबा

अब तक अभिमान पर सिर्फ वेदांत का ही हमला हो रहा था, पर अब विज्ञान का भी हमला हो रहा है। विज्ञान इतना व्यापक हो गया है कि अ बवह व्यक्ति का व्यक्तित्व भी कायम नहीं रहने देगा। विज्ञान के इस जमाने में वही समाज टिकेगा, जो अपने को समष्टि का अंश मानेगा। वे ही व्यक्ति टिकेंगे, जो यह मानेंगे हम अलग नहीं, सबके अंश हैं। अब राज्यों, पंथों या धर्मों की हदें टिक नहीं सकतीं। विज्ञान की बड़ी भारी बाढ़ आयी है, जिसमें संकुचित और छोटे-छोटे अहंभाव टिक नहीं सकेंगे। अगर कोई कहेगा कि मै। अपना छोटा-सा देश बनाना चाहता हूं, तो वह देश टिकेगा नहीं। आज छोटे-छोटे सवाल एकदम अंतर्राष्ट्रीय बन जाते हैं। हम यह नहीं कह सकते कि यह हमारे घर का सवाल है। लोग कहेंगे कि यह तुम्हारे घर का सवाल है, पर उससे हमें तकलीफ होती है। दुनिया की शांति भंग होती है। दुनिया के किसी कोने में कोई भी सवाल पैदा होता हे, तो उसका असर सारी दुनिया पर होता है। विज्ञान ने बता दिया है कि हमें सृष्टि के कानून के अनुसार ही बरतना होगा। सृष्टि के कानून वैसे तो अनेक हैं, पर मूलभूत कानून यह है कि 'जैसा बोओ वैसा पाओ।' आने वाले जमाना मेरा है, आपका नहीं, नेताओं का नहीं है। जो राजनैतिक पार्टियों के बड़े-बड़े नेता हैं, वे ऐसे गिरने वाले हैं, जैसे पतझड़! ओले गिरते हैं या बरफ पड़ती है, तब एकदम पतझड़ होती है, वैसे ही ये सब नेता एकदम गिरने वाले हैं, उनका एक ढेर होने वाला है। लेकिन आज इसका भान उन्हें नहीं है। वे गुरूर (घमंड) में हैं। हुकूमत का डंडा उनके हाथ में है। आज इन राजनयिकों का बड़ा जोर है। लेकिन आप देखेंगे कि एक वक्त ऐसा आयेगा, जब जिन हाथों ने एटम बम बनाया, वे ही हाथ उन बमों को नष्ट करेंगे और लोगों की खिदमत में लगेंगे। मैं जब आज के भिन्न-भिन्न नेताओं की ओर देखता हूं तो मुझे लगता है कि ये तो बच्चे हैं। वे अपने देश के सब मनुष्यों पर काबू रखने का दावा करते हैं पर उनका अपने ही मन, अपनी ही इंद्रियों पर काबू नहीं है। मन में काम, क्रोध सभी हैं। जिनका अपने ऊपर अधिकार नहीं, वे सारे देश को लीड करते हैं और योजना बनाते हैं, लेकिन योजना ही उनके पीछे लगती है। ये सारे एक प्रवाह में बहने वाले हैं। प्रवाह से कैसे बचना, यह ये लोग नहीं जानते। विज्ञान का उपयोग हम लोग किस तरह करते हैं, इस पर मानव का सुख निर्भर है। हम उसका उपयोग जनता का सुख बढ़ाने में, एकता बढ़ाने में, जनता को संपन्न करने में करते हैं या जनता में फूट डालने में और चंद लोगों के हाथ में सत्ता रखने में करते हैं ? यह हमारे सामने सवाल है। अगर विज्ञान को अहिंसा, प्रेम और मानवता की दिशा में ले जायेंगे, तो विज्ञान से कल्याण होगा अन्यथा विज्ञान से हम भस्मासुर की तरह भस्म हो जायेंगे।

(विनोबा साहित्य खण्ड 12)